तन सु शान
एक प्रेरक यात्रा

आज दुनिया में महिलाएं हर क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही हैं, तन सु शान भी उनमें से एक हैं। तन सु शान सिंगापुर की एक प्रमुख व्यावसायिक नेता हैं, जो दक्षिण पूर्व एशिया की सबसे बड़ी बैंकिंग संस्था डीबीएस बैंक की ग्रुप सीईओ के रूप में जानी जाती हैं। मार्च 2025 में उन्होंने यह पद संभाला, जिससे वे डीबीएस की पहली महिला सीईओ बनीं। फॉर्च्यून पत्रिका ने उन्हें 2025 में एशिया की सबसे प्रभावशाली महिला व्यवसायी के रूप में नामित किया। सिंगापुर में स्थित डीबीएस, जो 637 बिलियन डॉलर से अधिक की संपत्ति वाली एशिया की अग्रणी बैंक है, के नेतृत्व में तन सु शान ने बैंक को डिजिटल इनोवेशन, वेल्थ मैनेजमेंट और सस्टेनेबल फाइनेंस में नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया है।

रूफिया खान
शिक्षिका

प्रारंभिक जीवन और शिक्षा

तन सु शान का जन्म सिंगापुर में हुआ था, जहां उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा पूरी की। उनकी रुचि हमेशा से अर्थशास्त्र, राजनीति और दर्शनशास्त्र में रही, जो उनकी बाद की करियर में स्पष्ट रूप से झलकती है। 1986 से 1989 तक, उन्होंने ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के लिंकन कॉलेज से राजनीति, दर्शनशास्त्र और अर्थशास्त्र में मास्टर ऑफ आर्ट्स (एम.ए.) की डिग्री प्राप्त की। यह डिग्री उन्हें वैश्विक आर्थिक और सामाजिक मुद्दों की गहरी समझ प्रदान करने वाली साबित हुई।

शिक्षा के बाद, उन्होंने नेतृत्व विकास पर फोकस किया। उन्होंने हार्वर्ड बिजनेस स्कूल, स्टैनफोर्ड बिजनेस स्कूल और सिंगुलैरिटी यूनिवर्सिटी से एक्जीक्यूटिव लीडरशिप कोर्स पूरे किए, जो आधुनिक बैंकिंग में एआई और इनोवेशन के उनके दृष्टिकोण को मजबूत करते हैं। उनकी शिक्षा ने उन्हें न केवल वित्तीय विशेषज्ञ बनाया, बल्कि एक रणनीतिक विचारक के रूप में भी स्थापित किया, जो जटिल वैश्विक चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हैं।

करियर की यात्रा

- तन सु शान के पास उपभोक्ता बैंकिंग, वेल्थ मैनेजमेंट और संस्थागत बैंकिंग में 35 वर्षों से अधिक का अनुभव है। उनकी यात्रा वैश्विक स्तर पर फैली हुई है, जिसमें लंदन, टोक्यो, हांगकांग और सिंगापुर जैसे शहर शामिल हैं। उन्होंने अपने करियर की शुरुआत 1990 से सिटीबैंक और आईएनजी बैरिंग्स से की, जहां वे लंदन, टोक्यो और हांगकांग में कार्यरत रहीं। 1997 से 2005 तक, वे मॉर्गन स्टेनली में एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर रहीं और फिर 2008 से 2010 तक मैनेजिंग डायरेक्टर के रूप में कार्य किया। इस दौरान, उन्होंने साउथ-ईस्ट एशिया के लिए प्राइवेट वेल्थ मैनेजमेंट का नेतृत्व किया। 2005 से 2008 तक, वे सिटी में मैनेजिंग डायरेक्टर रहीं, जहां उन्होंने एशियाई बाजारों में वेल्थ मैनेजमेंट को मजबूत किया।
- 2010 में डीबीएस जॉइन करने के बाद, उन्होंने ग्रुप हेड ऑफ कंज्यूमर बैंकिंग एंड वेल्थ मैनेजमेंट का पद संभाला, जिसे उन्होंने लगभग एक दशक तक नेतृत्व किया। इस अवधि में, डीबीएस की वेल्थ एसेट्स 20 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि दर से बढ़ीं और 2017 के अंत तक 156 बिलियन डॉलर तक पहुंच गईं, जिससे डीबीएस दुनिया के शीर्ष छह वेल्थ मैनेजर्स में शामिल हो गया। 2019 से, वे इंस्टीट्यूशनल बैंकिंग की एमडी और हेड बनीं और डीबीएस हांगकांग की डिप्टी चेयरमैन भी रहीं। इसके अलावा, उन्होंने 10 वर्षों तक पीटी बैंक डीबीएस इंडोनेशिया की प्रेसिडेंट कमिश्नर के रूप में सेवा की।
- 2012 से 2014 तक, वे सिंगापुर की संसद में नामित सांसद रहीं, जहां उन्होंने फाइनेंशियल सेक्टर की नीतियों पर योगदान दिया। उनकी यात्रा में स्टैंडर्ड चार्टर्ड और यूओबी जैसे अन्य बैंकों का भी योगदान रहा, लेकिन डीबीएस में उनका 15 वर्षों का कार्यकाल सबसे महत्वपूर्ण रहा।

प्रभाव और भविष्य की दिशा

तन सु शान का प्रभाव न केवल डीबीएस पर, बल्कि पूरे एशियाई फाइनेंशियल सेक्टर पर पड़ा है। उन्होंने महिलाओं को नेतृत्व में प्रोत्साहित किया और सिंगापुर की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में योगदान दिया। उनके तहत, डीबीएस ने जेनरेटिव एआई को अपनाया, जो ग्राहकों को व्यक्तिगत सेवाएं प्रदान करता है। भविष्य में, वे सस्टेनेबिलिटी और इनक्लूसिव ग्रोथ पर फोकस करेंगी, जो एशिया की बदलती चुनौतियों का सामना करने में मदद करेगी। तन सु शान, डीबीएस बैंक की ग्रुप सीईओ, अपनी नेतृत्व शैली, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और एआई युग में मानवीय स्पर्श पर गहन अंतर्दृष्टि के लिए जानी जाती हैं। उनके विचार महिलाओं, नेताओं और पेशेवरों के लिए विशेष रूप से प्रेरणादायक हैं, जो दृढ़ता, सहानुभूति और दीर्घकालिक दृष्टि पर जोर देते हैं। तन सु शान एक ऐसी नेता हैं, जिनकी बुद्धिमत्ता, दृढ़ता और इनोवेटिव सोच ने उन्हें वैश्विक पटल पर स्थापित किया है। उनकी कहानी युवा पेशेवरों, विशेष रूप से महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत है।

डीबीएस में सीईओ के रूप में भूमिका

मार्च 2025 में ग्रुप सीईओ बनने के बाद, तन सु शान ने डीबीएस को 'जनरेटिव एआई एनेबल्ड बैंक विद ए हार्ट' के रूप में परिभाषित किया। मैकिन्से के साथ एक साक्षात्कार में, उन्होंने बताया कि कैसे एआई का उपयोग ग्राहक-केंद्रित बैंकिंग के लिए किया जा रहा है, जो दक्षता बढ़ाते हुए मानवीय स्पर्श बनाए रखता है। उनके नेतृत्व में, डीबीएस ने एशियाई फाइनेंस को ट्रांसफॉर्म करने पर फोकस किया, विशेष रूप से सस्टेनेबल फाइनेंस, डिजिटल इनोवेशन और क्षेत्रीय विस्तार पर। वे कॉर्पोरेट एंड कमर्शियल बैंकिंग को ग्लोबल हेड के रूप में भी जारी रख रही हैं, जो डीबीएस की संस्थागत क्षमताओं को मजबूत करता है। उनके विजन में, बैंकिंग को अधिक समावेशी और तकनीकी रूप से उन्नत बनाना शामिल है, जो एशिया की उभरती अर्थव्यवस्थाओं के अनुरूप है।

उनके विचार

तन सु शान के अनुसार, "सच्चा नेतृत्व कमरे में सबसे बुद्धिमान व्यक्ति होने के बारे में नहीं है, बल्कि सही प्रश्न पूछने और दूसरों को आगे बढ़ने का अवसर देने के बारे में है।" मीडियम लेख में उन्होंने टीम संस्कृति और भावनात्मक सुरक्षा के महत्व पर विस्तार से चर्चा की है। उनका मानना है कि जब नेता विनम्रता और सहयोग की भावना के साथ काम करता है, तो टीम के सदस्य स्वयं को सुरक्षित और सम्मानित महसूस करते हैं। ऐसे वातावरण में लोग खुलकर अपने विचार रखते हैं और अपनी क्षमता का पूरा उपयोग कर पाते हैं। इस दृष्टिकोण से वे युवा नेताओं को यह महत्वपूर्ण सीख देती हैं कि वास्तविक सफलता केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं, बल्कि सामूहिक प्रयासों से प्राप्त होती है। इसके साथ ही, कतर इकोनॉमिक फोरम में बोलते हुए, उन्होंने डिजिटल युग में व्यक्तिगत संबंधों पर जोर दिया। यह प्रेरक विचार बताता है कि तकनीक कितनी भी उन्नत हो, भावनात्मक जुड़ाव ही विश्वास बनाता है। तन सु शान का मानना है कि बैंकिंग में यह ग्राहक वफादारी की नींव है, जो हमें सिखाता है कि व्यवसाय में मानवीय पक्ष को कभी न भूलें।

उपलब्धियां और पुरस्कार

तन सु शान की उपलब्धियां उन्हें एशिया की शीर्ष महिला नेताओं में शुमार करती हैं। उनकी कुछ प्रमुख उपलब्धि इस प्रकार हैं -

- 2013 - प्राइवेट बैंकर इंटरनेशनल द्वारा 'आउटस्टैंडिंग प्राइवेट बैंकर ऑफ द ईयर' - एशिया की पहली प्राप्तकर्ता।
- 2013 - वेल्थब्रीफिंगएशिया द्वारा 'आउटस्टैंडिंग इंडिविजुअल कंट्रीब्यूशन टू एशियन वेल्थ मैनेजमेंट'।
- 2012 - इंस्टीट्यूट ऑफ बैंकिंग एंड फाइनेंस द्वारा 'डिस्टिंग्विश्ड फाइनेंशियल इंडस्ट्री कॉम्पिटेंट प्रोफेशनल'।
- 2014 - पीडब्ल्यूएम/द बैंक (फाइनेंशियल टाइम्स ग्रुप) द्वारा ''वर्ल्ड बेस्ट लीडर इन प्राइवेट बैंकिंग' - पहली सिंगापुरियन।
- 2018 - डिजिटल बैंकर द्वारा 'रिटेल बैंकर ऑफ द ईयर'।
- 2018 - फोर्ब्स द्वारा 'टॉप 25 इमर्जेंट एशियन वुमन बिजनेस लीडर'।
- 2019 - द एसेट द्वारा एशिया की छह महिलाओं में से एक, जो बैंकिंग को आकार देंगी।

इसके अलावा, उनके नेतृत्व में डीबीएस ने उपभोक्ता बैंकिंग में क्रांतिकारी बदलाव किए, जो एशिया में डिजिटल बैंकिंग का मॉडल बने।

जॉब का पहला दिन

जब मुझे बताना पड़ा, मैं यहां की अफसर हूं

फिल्मी रील्स में अक्सर जीवन का सजा-धजा रूप दिखाया जाता है। उसमें जीवन को किसी न किसी तरह के दिखावे और चमक-दमक में फ्रेम कर दिया जाता है, लेकिन मेरी ज्वाइनिंग के पहले दिन का अनुभव बिल्कुल अलग था। वह जीवन की सच्चाई थी बिना किसी फिल्टर के, बिल्कुल वास्तविक। मेरा चयन उत्तराखंड स्टेट सिविल सर्विसेज़ (पीसीएस) परीक्षा 2010 के माध्यम से हुआ था। प्रशिक्षण पूरा होने के बाद जब मुझे पहली पोस्टिंग के स्थान का पता चला, तो वह था ओखलकांडा, नैनीताल जिले का एक बेहद दुर्गम क्षेत्र। सच कहूं तो इससे पहले मैंने इस जगह का नाम भी कभी नहीं सुना था। मन में उत्सुकता भी थी और थोड़ी चिंता भी।

कमलेश्वरी मेहता
ब्लॉक एजुकेशन ऑफिसर
गरुड़, बागेश्वर

5 जून 2015 का वह दिन आज भी मुझे अच्छी तरह याद है, जब मैंने ओखलकांडा में अपनी ज्वाइनिंग की। यह अनुभव मेरे लिए बिल्कुल नया था। नैनीताल जिले का यह सबसे दुर्गम क्षेत्र माना जाता है। रास्ते में दूर-दूर तक कोई वाहन दिखाई नहीं देता था, न ही कहीं घरों की कतारें थीं। मेरे कार्यालय तक पहुंचने के लिए मुझे लगभग डेढ़ किलोमीटर पैदल चलना पड़ा। जब मैं ऑफिस पहुंची तो वहां कुछ लोग पहले से बैठे हुए थे। कुछ शिक्षक अपने काम से आए हुए थे और उस समय अपॉइंटमेंट तथा ट्रांसफर का दौर चल रहा था। कुछ क्लर्क भी वहां मौजूद थे। मैं करीब एक घंटे तक वहीं बैठी रही। मन में यह इच्छा थी कि स्टाफ और कर्मचारियों से बातचीत करके वहां की कार्यप्रणाली के बारे में जानकारी लूं, लेकिन शायद उन्होंने यह समझ लिया था कि मैं भी कोई शिक्षक हूं, जो अपने ट्रांसफर या किसी अन्य काम के सिलसिले में वहां आई हूं। काफी देर तक जब किसी ने मुझसे कुछ नहीं पूछा, तो अंततः मैंने ही उनसे पूछ लिया कि उप शिक्षा अधिकारी का कार्यालय कहां है और उनका कमरा कौन-सा है। उनमें से एक व्यक्ति ने जवाब दिया कि यहां अभी कोई कमरा तय नहीं है और यहां अभी कोई उप शिक्षा अधिकारी भी नहीं है। हां, इतना जरूर बताया कि जल्द ही कोई नए उप शिक्षा अधिकारी आने वाले हैं। तब मैंने मुस्कराते हुए कहा, "मैं ही वह नई उप शिक्षा अधिकारी हूं, मेरा नाम कमलेश्वरी मेहता है।"

यह सुनते ही वहां मौजूद सभी लोग एकदम से खड़े हो गए। उनके चेहरे पर आश्चर्य साफ दिखाई दे रहा था। उन्होंने तुरंत कहा, "सॉरी मैम, हमने आपको पहचाना नहीं। हमें लगा कि आप कोई टीचर होंगी, जो अपने काम के लिए यहां आई हैं।" इसके बाद उन्होंने मुझे सम्मानपूर्वक अंदर बुलाया, मेरा कमरा दिखाया और बैठने का आग्रह किया। थोड़ी ही देर में चाय भी आ गई। इसी तरह मेरे पहले दिन की शुरुआत हुई। शुरुआत में वहां सुविधाओं का अभाव था और परिस्थितियां भी चुनौतीपूर्ण थीं, लेकिन उसी कठिन इलाके में काम करते हुए मैंने अपनी जिम्मेदारियों को पूरी निष्ठा से निभाया। ओखलकांडा में ज्वाइनिंग का वह पहला दिन मेरे जीवन का ऐसा अनुभव बन गया, जिसने मुझे आगे आने वाली हर चुनौती का सामना करने की ताकत दी।

अनुभूति

सुबह की सैर, रसोई की फिक्र

बीते दिनों सुबह जब पार्क में गई तो घर-घर की कहानी पूछने वाली महिलाओं की जुबान में रसोई गैस की चर्चा थी। यह भी घर की महत्वपूर्ण जरूरत है। इसके बिना चूल्हा ठप्प और चूल्हे के बिना सारे कामकाज। इस बारे में सोचा तो पाया कि भारत अपने कच्चे तेल यानी क्रूड ऑयल की जरूरत का 85 से 88 प्रतिशत से अधिक हिस्सा विदेशों से आयात करता है, जो रोजाना लगभग 50 से 58 लाख बैरल के बीच है। भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा तेल आयातक है। प्रमुख तेल स्रोतों में रूस, इराक, सऊदी अरब और यूएई शामिल हैं। इसमें रूस सबसे बड़ा निर्यातक है, जहां से प्रतिदिन लगभग 18 लाख बैरल कच्चा तेल खरीदा जाता है। कुल आयात का लगभग 40 से 60 प्रतिशत यानी 25-27 लाख बैरल होर्मुज जलडमरूमध्य के रास्ते आता है। इसी तरह, एलपीजी की देशभर की जरूरत का लगभग 55-60 प्रतिशत और प्राकृतिक गैस का 50 प्रतिशत आयात किया जाता है। अपनी ऊर्जा जरूरतों के लिए हम विदेशी कच्चे तेल पर निर्भर हैं। चीन भी अपनी 70 प्रतिशत से अधिक तेल खपत का आयात करता है, जिसमें मुख्य रूप से मध्य पूर्व, रूस, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका शामिल हैं। 90 प्रतिशत से अधिक आपूर्ति समुद्र के रास्ते जलडमरूमध्य के माध्यम से टैंकरों द्वारा जाती है, जबकि रूस और मध्य एशिया से पाइपलाइन और रेल मार्ग का उपयोग किया जाता है।

अमृता पांडे
हल्द्वानी

चीन के तेल का सबसे बड़ा हिस्सा यानि लगभग 90 प्रतिशत समुद्री मार्गों से आता है। रूस, चीन का भी सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता है, जो 'पावर ऑफ साइबेरिया' पाइपलाइन और रेल नेटवर्क के माध्यम से तेल भेजता है। इसके अलावा, चीन ईरान और वेनेजुएला से भी बड़ी मात्रा में कच्चा तेल खरीदता है, जिसमें उसे भारी छूट प्राप्त होती है। फर्क मात्र इतना है कि आपूर्ति व्यवधान से बचने के लिए, चीन के पास भारी मात्रा में अपना बफर भंडार यानी पेट्रोलियम रिजर्वायर हैं, जो लगभग 900 मिलियन बैरल तक होने का अनुमान है। इधर हम गैस की कीमत से जूझने लगे हैं। पेट्रोल और गैस के दाम बढ़ने लगे हैं और युद्ध के बढ़ते संकट को देखते हुए आने वाले समय में यह स्थिति और गंभीर होने का अनुमान है। खैर इसका विश्लेषण तो विशेषज्ञ और जानकार ही कर सकते हैं, लेकिन फिलहाल मैं सोच रही हूं कि जो सड़कों को खोदकर गैस पाइपलाइन बिछा दी गई है और दो साल पहले हमारे शहरों में घरों की रसोई तक येन-केन-प्रकारेण पाइप पहुंचा दिए गए हैं, उनमें गैस कब आएगी? लकड़ी, कंडों और स्टोव से आगे बढ़ने की कहानी तो अच्छी है, लेकिन पीछे लौटकर जाना अब कितना मुश्किल है और आगे कितना संशय।

उधम सिंह और जलियांवाला बाग का प्रतिशोध

शहीद-ए-आजम सरदार उधम सिंह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के उन महान क्रांतिकारियों में से एक हैं, जिनका नाम साहस, संकल्प और अदम्य देशभक्ति का प्रतीक बन चुका है। दूसरे शब्दों में कहें तो उधम सिंह, जिन्हें बाद में राम मोहम्मद सिंह आज़ाद के नाम से भी जाना गया। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के ऐसे योद्धा थे जिन्होंने जलियांवाला बाग के शहीदों के लिए न्याय की लड़ाई को अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया। उनका बचपन का नाम शेर सिंह था। उनका जन्म 26 दिसंबर 1899 को पंजाब के संगरूर जिले के सुनाम नगर में हुआ था। उनके पिता सरदार टहल सिंह रेलवे विभाग में ओवरसियर (चौकीदार) के रूप में कार्य करते थे और माता का नाम नारायण कौर था।

सुनील कुमार महला
लेखक

दुर्भाग्यवश बचपन में ही उनके माता-पिता का निधन हो गया। परिणामस्वरूप उन्हें और उनके बड़े भाई मुक्ता सिंह को अमृतसर के सेंट्रल खालसा अनाथालय में शरण लेनी पड़ी। यही अनाथालय उनका घर बना और यहीं रहकर उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने 1918 में मैट्रिक की परीक्षा पास की। अनाथालय के अनुशासन और कठिन परिस्थितियों ने उनके व्यक्तित्व में आत्मनिर्भरता और दृढ़ता का विकास किया। 13 अप्रैल 1919 को अमृतसर के जलियांवाला बाग में हुआ भीषण नरसंहार उनके जीवन का निर्णायक मोड़ साबित हुआ। उस समय वे अमृतसर में ही थे और

कहा जाता है कि गोलीबारी के बाद वे घायल लोगों को पानी पिला रहे थे। इस अमानवीय घटना ने उनके मन पर गहरा प्रभाव डाला और उन्होंने इसके लिए जिम्मेदार लोगों से बदला लेने का संकल्प कर लिया। वे इस घटना के लिए पंजाब के तत्कालीन लेफ्टिनेंट गवर्नर माइकल ओ'ड्वायर को जिम्मेदार मानते थे। दरअसल 1919 में ब्रिटिश सरकार ने रॉलेट एक्ट नामक काला कानून पारित किया था, जिसके तहत किसी भी व्यक्ति को बिना मुकदमे के गिरफ्तार किया जा सकता था। इस कानून के विरोध में पूरे देश में आंदोलन शुरू हो गया। अमृतसर में लोकप्रिय नेता सैफुद्दीन किचलू और डॉ. सत्यपाल की गिरफ्तारी के विरोध में 13 अप्रैल 1919 को जलियांवाला बाग में एक शांतिपूर्ण सभा आयोजित की गई। उस दिन वैशाखी का पर्व भी था, इसलिए हजारों लोग वहां एकत्र हो गए थे। जब इस सभा की सूचना ब्रिटिश अधिकारी जनरल डायर को मिली तो वह लगभग 90 सैनिकों के साथ वहां पहुंचा। बिना किसी चेतावनी के उसने भीड़ पर गोली चलाने का आदेश दे दिया।

सैनिकों ने लगभग दस मिनट तक लगातार गोलियां चलाईं और सैकड़ों लोग वहीं ढेर हो गए। जान बचाने के लिए कई लोग बाग के कुएं में कूद गए, जिसे आज 'शहीदी कुआं' के नाम से जाना जाता है। नरसंहार के बाद अमृतसर में मार्शल लॉ लागू कर दिया गया और लोगों पर अमानवीय अत्याचार किए गए। इस घटना ने उधम सिंह के मन में प्रतिशोध की तीव्र भावना भर दी। उन्होंने लगभग 21 वर्षों तक धैर्यपूर्वक अवसर की प्रतीक्षा की। इस दौरान वे अफ्रीका, अमेरिका और यूरोप जैसे देशों की यात्रा करते हुए क्रांतिकारी गतिविधियों से जुड़े रहे। 1934 में वे लंदन पहुंचे और वहां उन्होंने राम मोहम्मद सिंह आजाद नाम अपनाया, जो भारत की सांप्रदायिक एकता का प्रतीक था। यह भी उल्लेखनीय है कि उधम सिंह, शहीद भगत सिंह को अपना गुरु मानते थे। वे उम्र में उनसे बड़े थे, फिर भी उन्हें अपना मार्गदर्शक समझते थे। कहा जाता है कि उनकी जेब में हमेशा भगत सिंह की तस्वीर रहती थी। इसके अलावा वे अमेरिका में सक्रिय गदर पार्टी से भी जुड़े रहे और भारत की स्वतंत्रता के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर समर्थन जुटाने का प्रयास करते रहे।

अंततः 13 मार्च 1940 को लंदन के कैक्सटन हॉल में आयोजित एक सभा के दौरान उधम सिंह ने माइकल ओ'ड्वायर पर गोली चलाकर उसकी हत्या कर दी। उन्होंने पिस्तौल को एक मोटी किताब के भीतर छिपाकर वहां प्रवेश किया था। इस प्रकार उन्होंने जलियांवाला बाग के शहीदों के लिए लिया गया अपना संकल्प पूरा किया। घटना के बाद उन्होंने भागने का प्रयास नहीं किया और स्वयं को गिरफ्तार करवा दिया, क्योंकि वे चाहते थे कि दुनिया भारतीयों के आत्मसम्मान और प्रतिरोध की भावना को समझे।

मुकदमे के दौरान उन्होंने निर्भीकता से कहा कि उन्होंने यह कार्य अपने देशवासियों पर हुए अत्याचार का बदला लेने के लिए किया है। अंततः 31 जुलाई 1940 को लंदन की पेंटनविले जेल में उन्हें फांसी दे दी गई। बाद में 1974 में उनकी अस्थियां भारत लाई गईं और उन्हें राष्ट्रीय सम्मान के साथ श्रद्धांजलि दी गई। उधम सिंह का जीवन साहस, देशभक्ति और न्याय के लिए संघर्ष की प्रेरक गाथा है।